ब्राज़ील की लोककथा

ऐनी, हिंदी : विदूषक

बन्दर की मूंछें

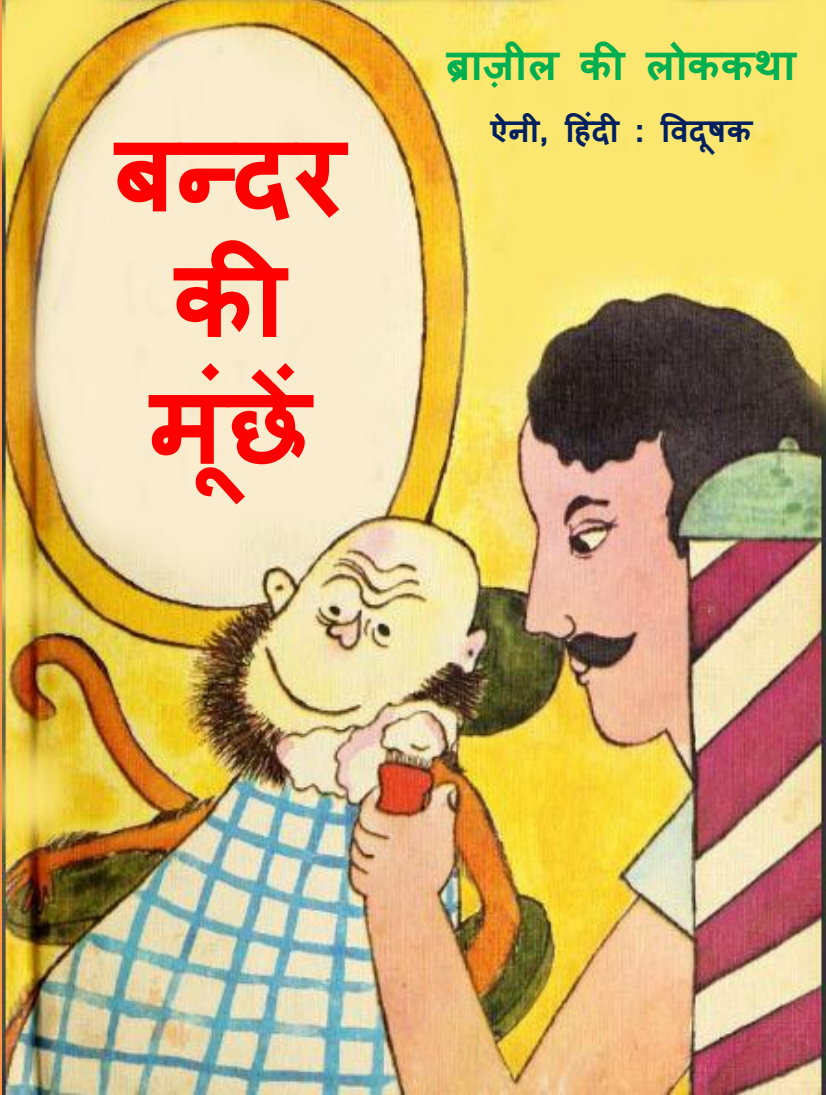

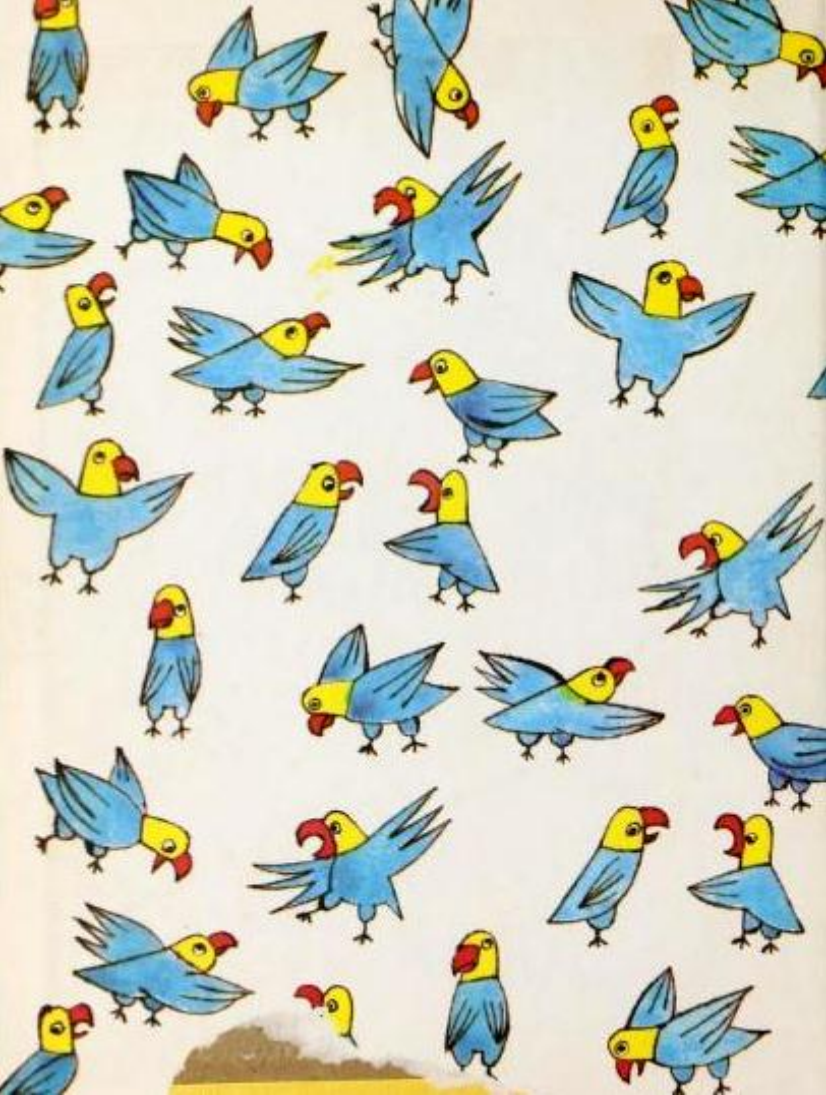

बन्दर की मूंछें

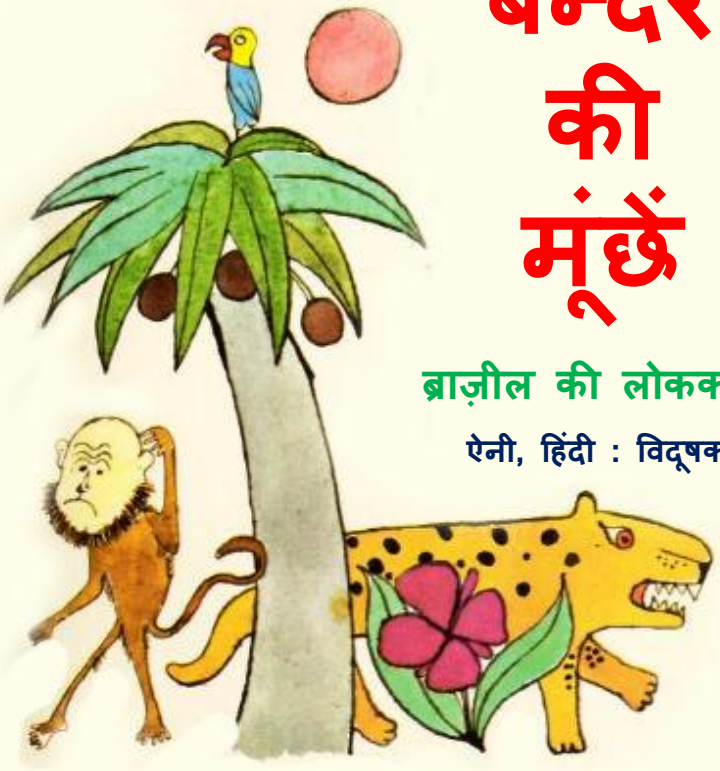

ब्राज़ील की लोककथा

ऐनी, हिंदी : विदूषक

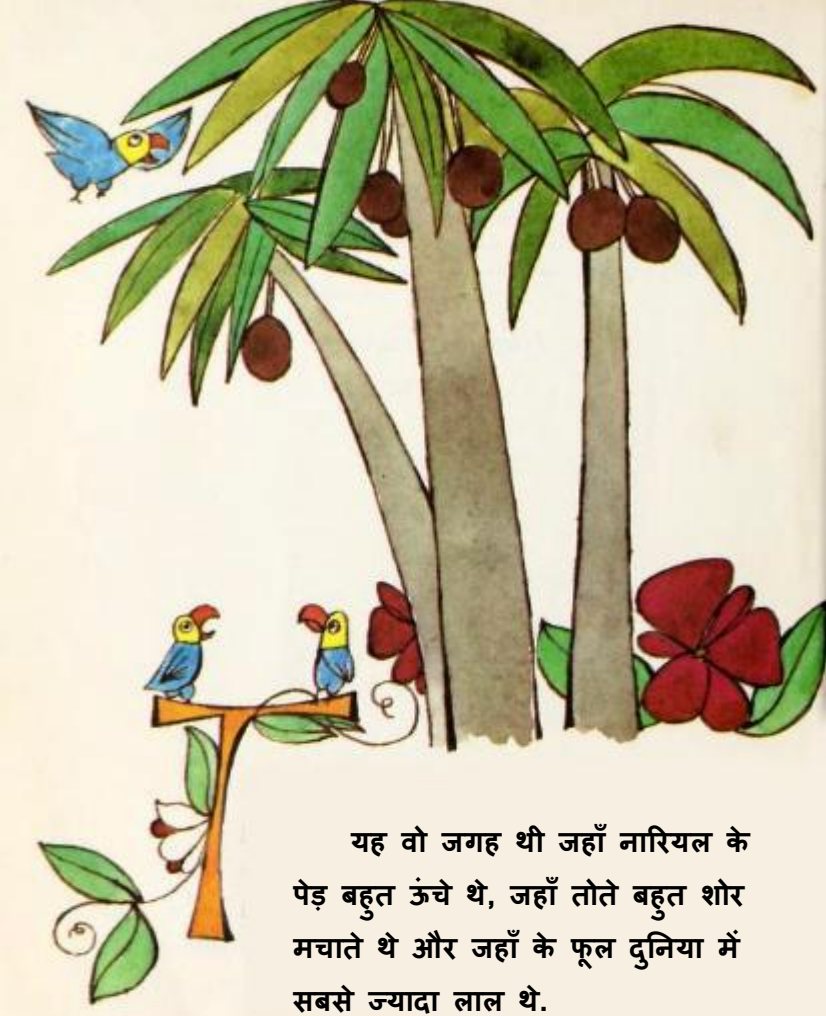

यह वो जगह थी जहाँ नारियल के पेड़ बहुत ऊंचे थे, जहाँ तोते बहुत शोर मचाते थे और जहाँ के फूल दुनिया में सबसे ज्यादा लाल थे.

वहां के सबसे ऊंचे नारियल के पेड़ पर एक बन्दर रहता था. वो दिन भर कुछ-न-कुछ शैतानी करता रहता था. वो अपनी लम्बी पूँछ की मदद से एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता रहता था. वो पेड़ के नीचे टहलते हुए जैगुआर और नदी में तैरते मगरमच्छों के सिरों पर ऊपर से नारियल फेंकता था.

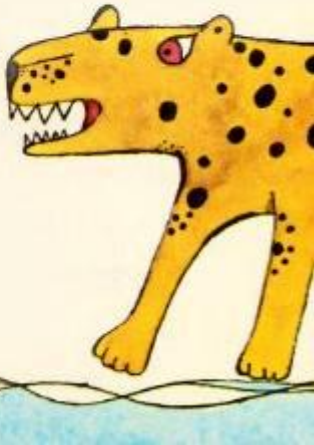

एक दिन बन्दर ने नारियल के पेड़ से उतरकर दुनिया देखने का अपना मन बनाया.

नदी के मोड़ पर एक छोटा सा शहर था. उस शहर में एक नाई की दुकान थी. जब बन्दर ने अन्दर झाँका तो उसने नाई को एक आदमी की दाढ़ी बनाते हुए देखा. फिर बन्दर अपने मन में सोचने लगा. अगर मैं अपनी मूंछे मुंडवा दूं तो फिर मैं देखने में कैसा लगूंगा? फिर वो झट से नाई की कुर्सी पर जाकर बैठ गया और उसने जल्दी से नाई से मूंछे उड़ाने को कहा. नाई ने उससे पहले बन्दर की मूंछे कभी काटी नहीं थीं. फिर भी उसने बन्दर की मूंछे काटीं.

मूंछे मुंडवाने के बाद बन्दर ने आईने में अपना चेहरा देखा. पहले तो उसने कुछ नहीं कहा, पर बाद में वो नाई की कुर्सी पर ज़ोर-ज़ोर से कूदने लगा और चीखने लगा, "मेरी मूंछे कहाँ गयीं? मेरी मूंछे फ़ौरन वापिस करो!"

नाई ने बहुत अदब और शांति से बन्दर को समझाया कि अब उसकी मूंछों को वापिस नहीं चिपकाया जा सकता था. पर नाई ने जितने धैर्य से समझाया, बन्दर उतना ही उतावला होता गया. अंत में बन्दर ने नाई से कहा, "देखो तुमने मेरी मूछें छीनी हैं. अगर तुम मुझे मूंछे वापिस नहीं कीं तो उनके बदले में तुम मुझे अपना उस्तरा दो!"

फिर नाई को झक मारकर अपना उस्तरा बन्दर को देना ही पड़ा. नाई को उसका बहुत दुःख हुआ क्योंकि वो उसका सबसे धारदार और चमकीला उस्तरा था.

उसके बाद बन्दर शहर में उस्तरे को लेकर घूमता रहा. वो मूंछों के छिन जाने पर बीच-बीच में खुद से बड़बड़ाता भी था. तभी नदी के किनारे पर उसे एक औरत मछली साफ़ करती हुई दिखी. क्योंकि औरत बहुत गरीब थी इसलिए वो एक लकड़ी की डंडी से मछली के शल्क (स्केल) साफ़ कर रही थी.

"यह लो," बन्दर ने बड़ी सभ्यता और शालीनता से कहा, "यह लो मेरा उस्तरा. उससे तुम मछली के शल्कों को बहुत तेज़ी से साफ़ कर पाओगी."

इससे पहले कि औरत "धन्यवाद" कहती, बन्दर शहर के अन्य नजारों को देखने के लिए चम्पत हो गया.

बन्दर बाद में लौटकर आया और उसने औरत से कहा, "मेरा उस्तरा मुझे वापिस दो."

उस औरत ने आंह भरते हुए कहा, "अर्रे, वो उस्तरा बेहद चिकना था और वो मेरे हाथ से फिसलकर नदी में गिर गया. मुझे पता नहीं कि नदी की धार उसे कहाँ बहा ले गई."

"तुमने मेरा सुन्दर और धारदार उस्तरा खो दिया!" बन्दर गुस्से में दांत किटकिटाते हुए चिल्लाया, "तब तुम मुझे अपनी मछली दो!"

औरत ने बहुत आरज़ू-मिन्नत की. उसने कहा कि वो मछली उसके भूखे बच्चों के लिए रात का भोजन थी. पर बन्दर ने औरत की एक बात नहीं सुनी. वो अपनी बात पर अड़ा रहा और उस्तरे के बदले में मछली मांगता रहा. कुछ देर बाद बन्दर के हाथ में वो मछली थी जिसे औरत ने कुछ देर पहले ही पकाया था.

कुछ देर बाद बन्दर को कॉफ़ी के पेड़ के नीचे एक आदमी दिखाई दिया, जो एक सूखी रोटी का टुकड़ा खा रहा था. रोटी पुरानी, बासी और सूखी थी. आदमी के पास उस रोटी को निगलने के लिए कोई रसीली चीज़ नहीं थी.

“यह लो,” बन्दर ने बड़ी सभ्यता और शालीनता से कहा, “तुम्हारी सूखी रोटी एकदम बेस्वाद होगी. लो उसके साथ यह मछली खाओ तो तुम्हें अच्छा लगेगा.”

उस आदमी ने बन्दर का बहुत शुक्रिया अदा किया और मछली ले ली. फिर बन्दर शहर देखने के लिए आगे बढ़ा.

अगले दिन बन्दर उस आदमी के पास वापिस आया. उस समय वो आदमी कॉफ़ी के पेड़ की फलियाँ तोड़ रहा था.

“गुड मोर्निंग,” बन्दर ने कहा. “मैं अपनी मछली वापिस लेने आया हूँ.”

“तुम्हारी मछली!” वो आदमी चिल्लाया. “कल रात मैं उसे खा गया.”

“मैंने तो तुम्हें वो मछली उधार दी थी, और तुम उसे खा गए?” बन्दर चिल्लाया और फिर गुस्से से ऊपर-नीचे कूदने लगा. “फिर बदले में तुम मुझे कुछ कॉफ़ी की फलियाँ दो!” जैसे ही आदमी ने बन्दर को कुछ कॉफ़ी की फलियाँ दीं वैसे ही वो वहां से चम्पत हो गया.

फिर बन्दर को एक महिला दिखी जो अपने घर के पास आटा पीस रही थी.

"उस आटे के बड़े स्वादिष्ट केक बनेंगे," बन्दर ने मुंह दबाकर हँसते हुए कहा, "पर अगर केक के साथ में कुछ कॉफ़ी भी होगी तो कितना अच्छा लगेगा, क्यों?" फिर बड़ी सभ्यता और शालीनता से बन्दर ने कॉफ़ी की फलियों वाली छोटी टोकरी उस महिला को थमा दी.

"तुम्हारा बहुत धन्यवाद!" उस महिला ने कहा. उसने आज तक इतना दानी बन्दर कभी नहीं देखा था.

फिर महिला ने कॉफ़ी को भूना और उसकी खुशबूदार कॉफ़ी बनाई. उसने अपने पड़ोसिनों को कॉफ़ी पीने के लिए बुलाया. सब पड़ोसिनों ने मिलकर कॉफ़ी पी. जब वो कॉफ़ी की आखिरी चुस्की ले रही थीं तभी बन्दर वापिस लौटा.

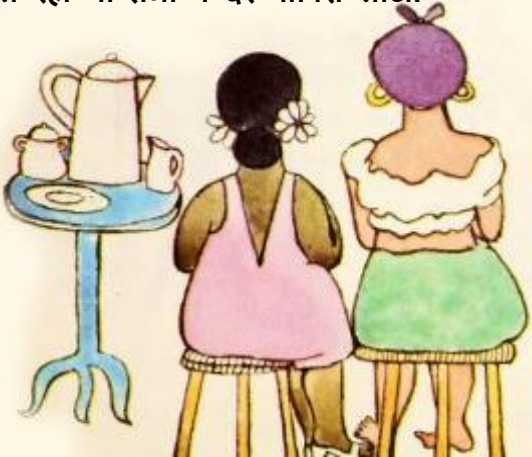

“मेरी कॉफ़ी की फलियाँ मुझे वापिस दो. अब मेरा खुद कॉफ़ी पीने का मन कर रहा है,” बन्दर ने डरावना चेहरा बनाते हुए कहा.

“अर्रे! यह कैसे संभव हो सकता है,” उस महिला ने कहा. “हमने तो सब कॉफ़ी ख़त्म कर दी.”

“क्या!” बन्दर ज़ोर से चिल्लाया. “मेरी सारी कॉफ़ी ख़त्म कर दी! मुझे मेरी कॉफ़ी की फलियाँ वापिस चाहिए! उन्हें तुरंत मुझे वापिस दो!”

उस महिला और बन्दर में काफी देर तक तू-तू मैं-मैं चलती रही. फिर बन्दर को तवे पर एक गर्मागर्म रोटी पकती हुई दिखी. बाकी गुंथा आटा एक बर्तन में रखा था. तवे वाली रोटी काफी छोटी थी!

बन्दर ने कहा, “क्योंकि तुमने मेरी कॉफ़ी की फलियाँ ली हैं, इसलिए मैं बदले में तुम्हारा आटा ले जा रहा हूँ!”

बन्दर गुंथे आटे की थाली को लेकर आगे चला. वहां एक केले के पेड़ की छाँव में उसे एक औरत बैठी दिखी. औरत के साथ उसकी चार छोटी, सुन्दर बेटियां भी थीं. औरत, बेटियों के काले चमकीले बालों की चोटियाँ बना रही थी.

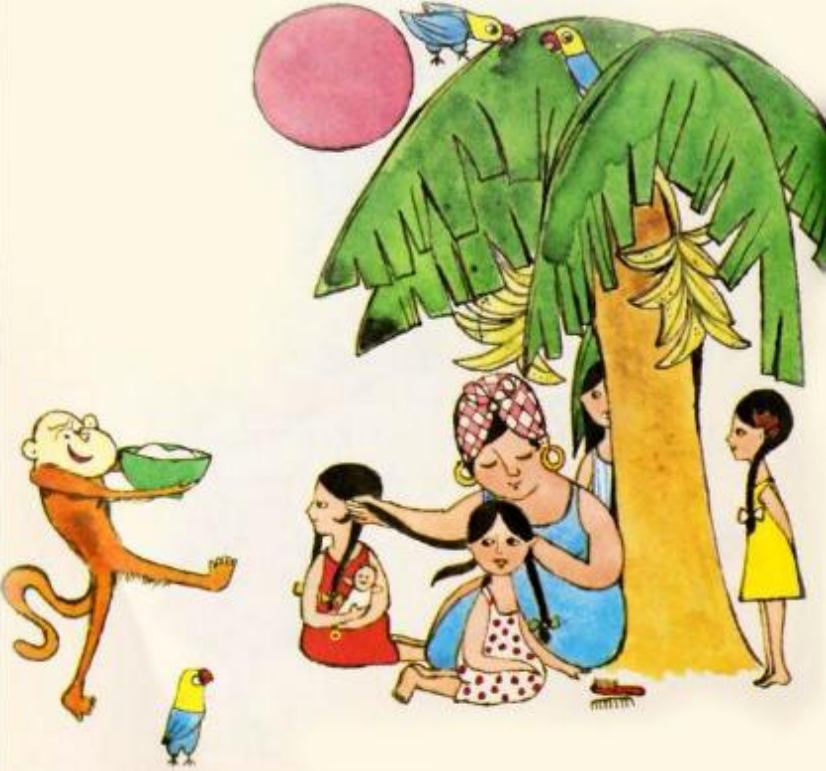

“अरे वाह, तुम्हारी बेटियों तो बेहद सुन्दर हैं,” बन्दर ने बड़ी सभ्यता और शालीनता से कहा.

औरत शरमाते हुए मुस्कुराई. उसे अपनी बेटियों की तारीफ़ सुनकर बहुत अच्छा लगा. सच में उसकी बेटियां बहुत सुन्दर थीं.

“तुम्हारी बेटियां इतनी अच्छी हैं,” बन्दर ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, “उन्हें दोपहर को रोटियां खानी चाहिए. देखो मेरे पास कुछ आटा है. तुम उसमें कुछ नारियल का पानी मिला देना. उनसे बहुत स्वादिष्ट मीठी रोटियां बनेंगी.”

आटा लेकर औरत और उसकी लड़कियों ने बन्दर का शुक्रिया अदा किया. इतने सभ्य और दानी बन्दर से उनका पाला पहले कभी नहीं पड़ा था.

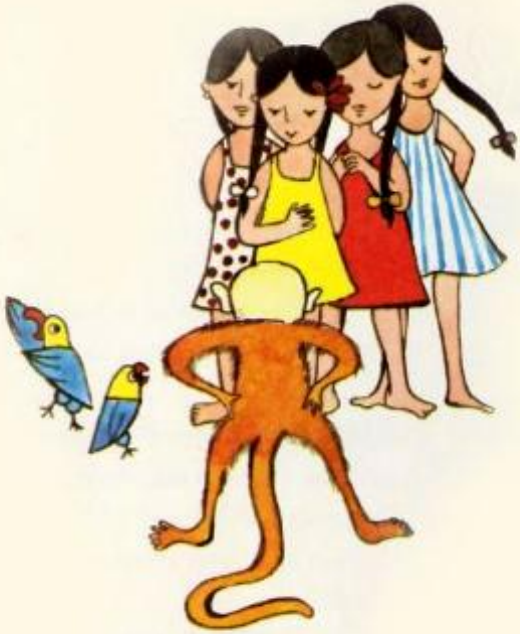

अगले दिन बन्दर वापिस आया.

"मीठी रोटियां बहुत स्वादिष्ट थीं!" सभी लड़कियों ने मिलकर कहा. "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद."

फिर बन्दर ने अपने दांत किटकिटाते हुए कहा, “तुम्हारी इतनी हिम्मत! क्या तुम मेरा आटा खा गईं!”

छोटी लड़कियों ने आटे खाने की बात स्वीकार की. फिर लड़कियां डर के मारे रोने लगीं. पर उनकी माँ ने बन्दर से कहा, “तुमने ही तो हमें आटा दिया था, इसलिए हमने उसे खा लिया.”

“मैंने तुम्हें वो आटा हमेशा के लिए नहीं दिया था. मैंने तो उसे सिर्फ उधार दिया था!” बन्दर ज़ोर से चिल्लाया. “पर अब क्योंकि तुमने वो सारा आटा खा लिया है जो तुम्हारा नहीं था, इसलिए मैं अब तुम्हारी कोई चीज़ लेकर जाऊँगा. मैं तुम्हारी एक लड़की को अपने साथ ले जाऊँगा जिससे कि वो मेरे लिए नारियल की बर्फी बना सके. देखो, मैं इस लड़की को ले जा रहा हूँ!”

फिर बन्दर ने उस औरत की सबसे छोटी और सबसे सुन्दर दिखने वाली लड़की की ओर इशारा किया.

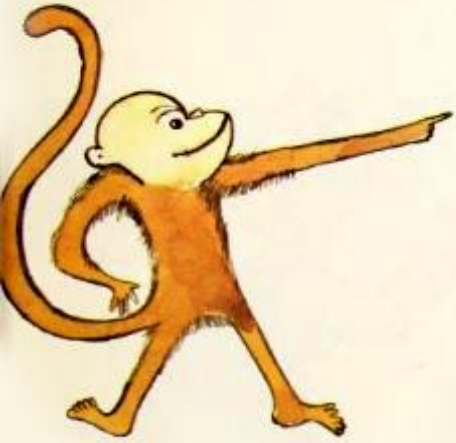

यह सुनकर वो औरत रोने लगी. उसने घुटनों के बल बैठकर, दोनों हाथ जोड़कर बन्दर से लड़की को छोड़ जाने की विनती की. पर उस दुष्ट बन्दर ने उसकी एक नहीं सुनी.

दोपहर भर बन्दर और औरत में झगड़ा चलता रहा. अंत में शाम हो गई और सूरज ढलने लगा. अँधेरा होने लगा पर दोनों की तू-तू मैं-मैं जारी रही. तभी उस औरत का पति अपने काम से घर लौटा.

औरत का पति वही नाई निकला जिसने बन्दर की मूंछें उड़ाई थीं.

"नमस्कार," उसने बन्दर से पूछा. "क्या मेरा उस्तरा तुम्हारे किसी काम आया?"

फिर बन्दर नाई पर चिल्लाने लगा. “अच्छा तो तुम वही हो! अगर तुमने मेरी सुन्दर मूंछे नहीं छीनी होतीं तो फिर मैं तुम्हारी लड़की को नहीं ले जाता!”

नाई ने अपनी पत्नी की ओर देखा जो बेचारी फूट-फूट कर रो रही थी. फिर उसने अपनी सुन्दर लड़कियों की ओर भी देखा. फिर एक रहस्यमय हंसी के साथ उसने बन्दर से कहा, "अगर मैं तुम्हारी मूंछे तुम्हें वापिस कर दूं तो फिर क्या तुम हमें हमारी बेटी को छोड़ जाओगे?"

पहले तो बन्दर ने अपनी नाक सिकोड़ी फिर कुछ सोचने के बाद उसने कहा, “ठीक है.” शायद इसका एक कारण यह भी था कि बन्दर अब शहर देखते-देखते तंग आ चुका था. वो अब अपने घर – यानि ऊंचे नारियल के पेड़ पर जाने को उत्सुक था. वो नारियल के पेड़ के ऊपर बैठकर नीचे गुज़रते जागुआर और नदी में तैरते मगरमच्छों के सिरों पर नारियल फेंकना चाहता था.

"बहुत अच्छा," नाई ने कहा. "तुम्हारी मूंछे वापिस लगाना काफी कठिन काम है, पर मैं वो काम कर सकता हूँ. उसमें आठ दिनों का समय लगेगा. चलो, मेरे साथ आओ." फिर नाई, बन्दर को अपने घर के तहखाने में ले गया.

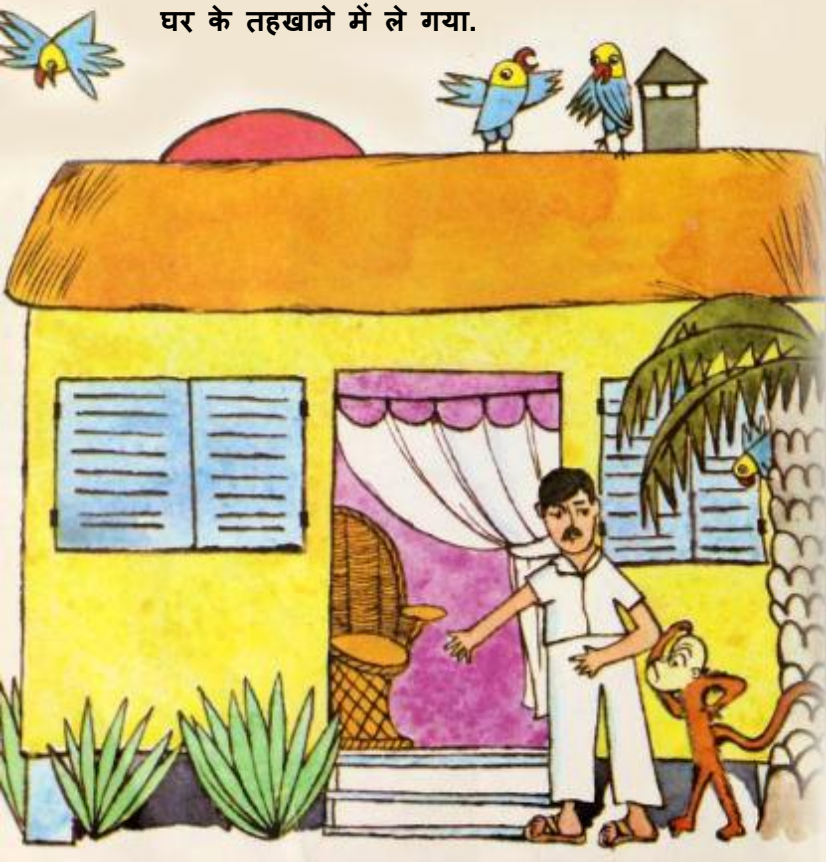

“तुम यहाँ बिल्कुल बिना हिले-डुले बैठे रहना,” नाई ने कहा. “मैं तुम्हें एक जादुई नारियल खाने के दूंगा. मैं एक जादू का मन्त्र भी पढ़ूंगा. उससे तुम्हारी मूंछे वापिस आ जाएँगी. देखो, हर ग्राहक के लिए मैं यह नहीं करता हूँ. पर तुम मेरे काफ़ी ख़ास मेहमान हो.”

फिर बन्दर उस अँधेरे और ठन्डे तहखाने में पूरे आठ दिन छिपा बैठा रहा. वो अपनी पूरी जिंदगी में इतना शांत पहले कभी नहीं बैठा था.

आठ दिनों बाद नाई आया और उसने बन्दर को आवाज़ दी.

“वाह...” उसने कहा, “देखो मैंने तुम्हें तुम्हारी मूंछे वापिस कर दी हैं!” फिर उसने बन्दर को आईने में उसका चेहरा दिखाया. वाकई में बन्दर की मूंछे उग आई थीं – वो पहले से भी अधिक लाल और ज्यादा घनी थीं!

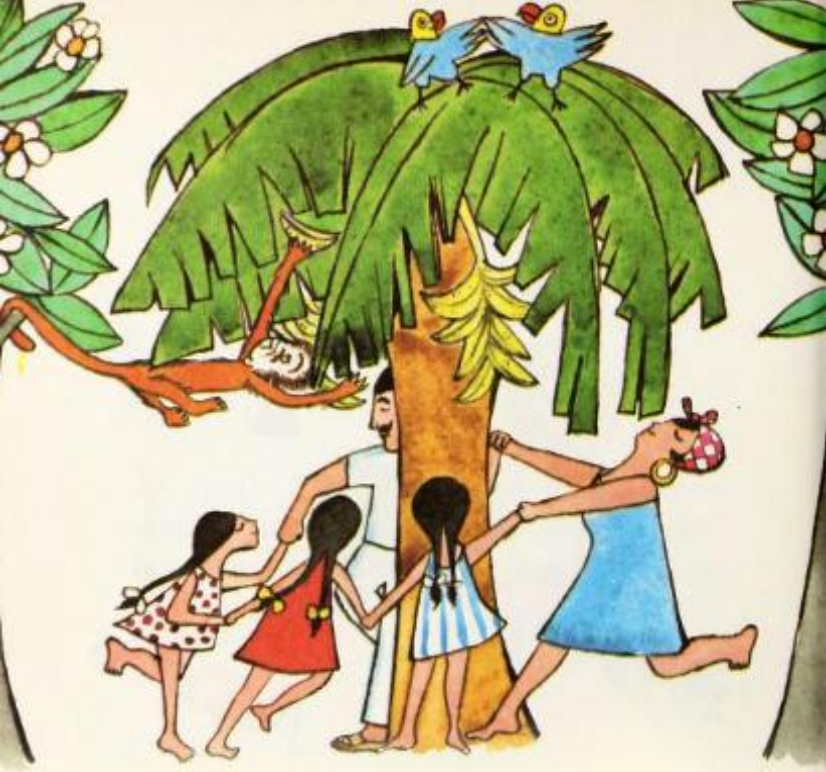

फिर क्या था. बन्दर ख़ुशी से नाई के बगीचे में एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदने लगा. नाई, उसकी पत्नी और बेटियां सभी ख़ुशी से नाचने लगे.

सबसे छोटी लड़की कुछ उदास ज़रूर थी. उसे लगा कि अगर वो बन्दर के साथ जाती तो वो भी पेड़ों पर एक डाल से दूसरी डाल पर कूद सकती थी. तब वो बन्दर से तमाम नई चालाकियां भी सीख सकती थी.

तभी नाई मुड़ा और उसने गुस्से में बन्दर की ओर अपनी ऊँगली दिखाते हुए कहा. “देखो,” नाई ने कहा, “अब मेरा उस्तरा वापिस करो. मैंने तुम्हारी मूंछे लौटा दी हैं!”

यह सुनकर बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता हुआ शहर से बाहर भागा. वो उसी जंगल में वापिस गया जहां नारियल के पेड़ बहुत ऊंचे थे, जहाँ तोते बहुत शोर मचाते थे और जहाँ के फूल दुनिया में सबसे लाल थे.

शायद वो बन्दर अभी भी वहीं रहता है. उसके बाद वो दुबारा शहर में कभी वापिस नहीं आया. शायद वो अभी भी जैगुआर और मगरमच्छों के सिरों पर पेड़ के ऊपर से नारियल फेंकता है.

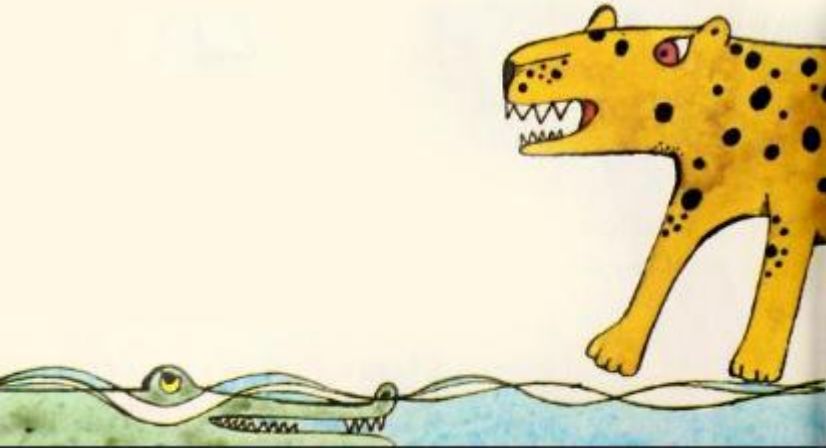

नाई, उसकी पत्नी और बेटियां भी अब खुश हैं. नाई ने बन्दर की मूंछे कैसे लौटाईं, यह सोचकर वे बेहद प्रसन्न होते हैं.